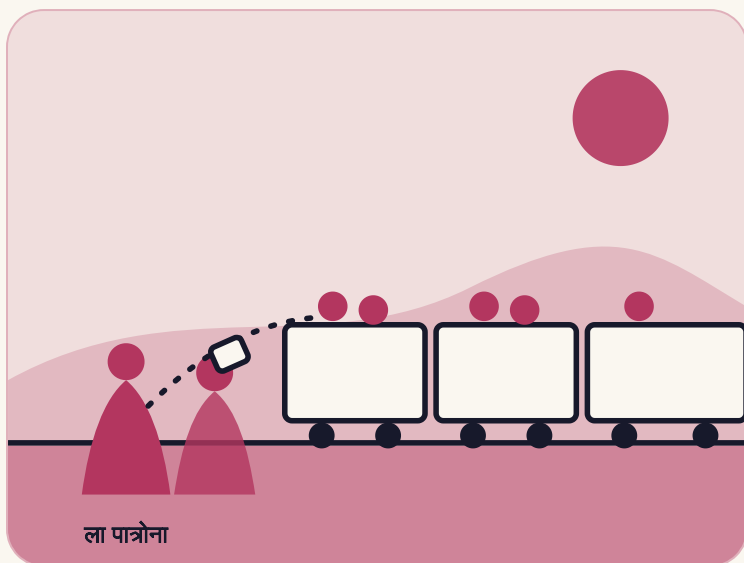




मेक्सिको

चलती ट्रेन को खाना खिलाने वाली औरतें

1995 में मेक्सिको के एक गाँव की औरतों ने ट्रेन पर बैठे भूखे अजनबियों की ओर रोटी फेंकी। वे यह करती रहीं।

कहाँ ला पात्रोना, वेराक्रूज़

कौन लास पात्रोनास, ला पात्रोना गाँव की औरतों का एक समूह

कब 1995 से 2026

4 मिनट में पढ़ें

कहानी

ला पात्रोना मेक्सिको के वेराक्रूज़ में एक छोटा-सा गाँव है। उसके चारों ओर गन्ना उगता है। वहाँ से मालगाड़ियाँ गुज़रती हैं, और बहुत-सी गाड़ियों की छत पर लोग बैठे होते हैं।

ये सवार प्रवासी हैं। ज़्यादातर ग्वाटेमाला, होंडुरास और अल सल्वाडोर से आते हैं। वे उत्तर की ओर जाते हैं, और बहुत से लोग अमेरिका पहुँचने की उम्मीद रखते हैं। इन ट्रेनों का एक नाम है: ला बेस्तिया, यानी “दरिद्र।”

फ़रवरी 1995

फ़रवरी 1995 में एक दिन रोमेरो परिवार की बहनें रोटी और दूध ख़रीदने गईं। वे रेलवे फाटक पर एक ट्रेन के गुज़रने का इंतज़ार कर रही थीं। छत पर बैठे आदमियों ने पुकारकर कहा कि वे भूखे हैं।

और डिब्बे गुज़रे, और आवाज़ें आईं। बहनों ने रोटी और दूध उनकी ओर फेंक दिया।

घर पहुँचकर उन्होंने अपनी माँ, लेओनिला, को बताया। परिवार ने बैठकर तय किया कि वे यह फिर करेंगे। अगले दिन उन्होंने खाने के करीब 30 थैले फेंके। उन्हें ट्रेनों के खतरों के बारे में पता नहीं था। उन्हें बस भूखे लोग दिखे।

पटरियों के पास एक रसोई

शुरू में हर औरत अपने घर पर खाना बनाती थी। दूसरी औरतें भी जुड़ीं, और पड़ोसियों ने खाने का सामान दिया। परिवार ने एक साझी रसोई के लिए ज़मीन दी।

हर किसी ने मदद नहीं की। कुछ लोगों ने उनके रास्ते में रुकावटें डालीं। कुछ पतियों ने अपनी पत्नियों से घर पर रहने को कहा। कुछ औरतें टिकी रहीं, और वे यह करती रहीं।

जब ट्रेन की सीटी बजती है, तो कोई चिल्लाता है, “बिऒने त्रेन!” यानी “ट्रेन आ रही है!” औरतें खाने के डिब्बे और पानी से भरी ठेलागाड़ियाँ लेकर पटरियों की ओर दौड़ती हैं। वे पास खड़ी होकर अपनी बाँहें आगे बढ़ाती हैं। करीब दो मिनट में सब खत्म हो जाता है।

जब तक भगवान मुझे ज़िंदगी देगा, और जब तक पलायन होता रहेगा, मुझे लगता है मैं यहाँ मदद करती रहूँगी।

नोर्मा रोमेरो, In These Times से, 2012

1995

जिस साल यह शुरू हुआ

~20

समूह में औरतें, 2026

31 साल

और अब भी जारी

खाने से कहीं ज़्यादा

काम बढ़ता गया। औरतों ने एक छोटा दवाखाना और एक घर बनाया, जहाँ प्रवासी आराम कर सकें।

एक दिन एक नौजवान ने अपनी बीमार मंगेतर के लिए मदद की गुहार लगाई। नोर्मा को डर था कि पुलिस उन्हें गिरफ़्तार कर सकती है। फिर भी वे लड़की को गाड़ी से अस्पताल ले गईं। तीन जगह उसका इलाज करने से मना कर दिया गया। आखिर में नोर्मा उसे घर ले आई, और एक नर्स ने मदद की।

एक हफ़्ते बाद वह युवती ठीक हो गई। वह और उसका मंगेतर फिर ट्रेन पर चढ़ गए।

समय बदल गया है। 2014 में मेक्सिको ने फ्रोंतेरा सुर नाम का एक कार्यक्रम शुरू किया। 2015 में समूह की 20वीं सालगिरह पर सिर्फ़ एक प्रवासी ट्रेन पर उनके पास से गुज़रा। आज कितने लोग सवार होते हैं, इस पर खबरें अलग-अलग हैं। नोर्मा कहती हैं कि वे मदद करती रहेंगी, क्योंकि प्रवासी सीमा तक पहुँचने के दूसरे रास्ते ढूँढते हैं।

इकतीस साल बाद भी करीब 20 औरतें खाना लेकर पटरियों तक जाती हैं।

कब क्या हुआ

- **1995** बहनें ट्रेन पर बैठे भूखे आदमियों की ओर रोटी फेंकती हैं।
- **2012** पंद्रह औरतें एक रसोई, एक दवाखाना और एक विश्राम घर चलाती हैं।
- **2014** मेक्सिको फ्रोंतेरा सुर कार्यक्रम शुरू करता है।
- **2015** 20वें साल में सिर्फ एक प्रवासी पास से गुज़रता है।
- **2016** वेराकूज़ का एक विश्वविद्यालय उनके लिए एक सम्मान पदक की घोषणा करता है।
- **2026** करीब 20 औरतें अब भी खाना लेकर पटरियों तक जाती हैं।

दूसरा अध्याय

यह कहानी खास क्यों है

किसी ने इसकी योजना नहीं बनाई थी। यह किराने के एक थैले और भूख की कुछ पुकारों से शुरू हुआ। एक आदत बढ़कर एक रसोई, बारी-बारी से काम की एक व्यवस्था और एक सार्वजनिक मुहिम बन गई।

यह कोई इलाज नहीं है। एक सदस्य, हूलिया रामिरेज़, कहती हैं कि काश प्रवासियों को अपने घर पर ही काम मिल जाता, ताकि किसी को घर छोड़ना न पड़े।

हमारी राय

दया एक व्यवस्था बन गई: एक रसोई, बारी-बारी से काम, और पटरियों तक का एक रास्ता।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 जो दिखे, उस पर कुछ करें

बहनों को खतरों का पता नहीं था। उन्होंने भूख देखी और रोटी फेंक दी।

यह आजमाएँ: इस हफ्ते आपने जो एक छोटी ज़रूरत देखी, उसे चुनें, और उसके लिए एक छोटा काम करें।

2 जो पास है, उसी से शुरू करें

उन्होंने रोटी और दूध से शुरुआत की, फिर चावल, बीन्स और टॉर्टिला।

यह आजमाएँ: जो आपके पास पहले से है, जैसे एक घंटा या कोई हुनर, उसकी सूची बनाएँ, और किसी एक को उसकी पेशकश करें।

3 इसे दिनचर्या का हिस्सा बना दें

वे लगभग हर दिन लोगों को खाना खिलाती थीं, रसोई में बारी-बारी से काम के साथ।

यह आजमाएँ: हर हफ्ते मदद के एक छोटे काम के लिए एक तय समय चुनें।

4 दूसरों को जुड़ने दें

एक परिवार एक समूह बन गया, और दुकानों और स्कूलों ने खाना दिया।

यह आजमाएँ: जो काम आप अभी अकेले करते हैं, उसमें किसी एक को साथ जुड़ने को कहें।

साथ ले जाने वाली एक बात

जो आपके हाथ में है, उसी से मदद कीजिए।

स्रोत (अंग्रेजी में)

In These Times

The Patrons of Veracruz

Comboni Missionaries

Mexico: Solidarity Without Borders

VICE

These Women Are Feeding Central American Immigrants Atop a Speeding Train

BELatina

Meet Las Patronas, the Mexican Women Who Have Fed Migrants From a Moving Train

तथ्य-जाँच नोट: शुरुआत कैसे हुई, इस पर स्रोतों में अंतर है। In These Times फाटक पर दो बहनों, बेर्नार्दा और रोसा, के नाम बताता है। Comboni नोर्मा को तीसरी बहन के रूप में उद्धृत करता है, जिसमें रोसा रोटी फेंकती हैं। Vice कहता है कि नोर्मा ने किराने का सामान दे दिया। कहानी में सिर्फ 'रोमेरो परिवार की बहनें' लिखा है। पहले दिन करीब 30 थैले (Comboni, BELatina) या 25 टिफिन (Vice) बताए गए। समूह में 15 (2012), 14 (2015) और करीब 20 (2026) औरतें बताई गईं। रोज़ के खानों की गिनती में बहुत अंतर है, इसलिए कोई गिनती नहीं दी गई। फ्रोंतेरा सुर के बाद Vice ने ट्रेन पर एक प्रवासी देखा (2015), Comboni कहता है कि ट्रेन से सफ़र मना है, और BELatina (2026) कहता है कि हज़ारों लोग अब भी सवार होते हैं। मंगेतर वाली कहानी नोर्मा का अपना बयान है। "हमारी राय" वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।